Anusandhanvallari
Vol 2025, No.1
January 2025
ISSN 2229-3388

कृष्णा सोबती के निबंधों में लेखिका का वैचारिक साहस

पुजा जितेंद्रप्रताप सिंह, प्रा. डॉ. सुनीता बनसोड
सरदार पटेल महाविद्यालय, चंद्रपुर

सारांश :-

हिन्दी साहित्य में कृष्णा सोबती को प्रायः एक सशक्त कथाकार के रूप में स्मरण किया जाता है, किन्तु उनके निबंध, वक्तव्य और सामाजिक टिप्पणियाँ भी समान रूप से महत्त्वपूर्ण हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य सोबती के निबंधात्मक लेखन में निहित वैचारिक साहस का विश्लेषण करना है। यहाँ 'वैचारिक साहस' से आशय उस बौद्धिक निर्भीकता से है जिसके माध्यम से लेखिका सत्ता-संरचनाओं, पितृसत्तात्मक मान्यताओं, सांस्कृतिक रूढ़ियों और साहित्यिक संस्थानों से संवाद करती हैं, उन्हें प्रश्नांकित करती हैं तथा आवश्यक होने पर उनका प्रतिरोध भी करती हैं।

सोबती के निबंधों में स्त्री की अस्मिता, भाषा की स्वायत्तता, लेखक की स्वतंत्रता और सामाजिक न्याय के प्रश्न केंद्रीय रूप से उपस्थित हैं। वे किसी वैचारिक खांचे में सीमित न होकर अनुभव-आधारित दृष्टि प्रस्तुत करती हैं। उनके लेखन में न तो अनावश्यक आक्रोश है और न ही समझौते की प्रवृत्ति; बल्कि एक संतुलित, तर्कसंगत और स्पष्ट अभिव्यक्ति है, जो पाठक को आत्ममंथन के लिए प्रेरित करती है।

यह शोध पाठ-विश्लेषण पद्धति पर आधारित है, जिसके माध्यम से चयनित निबंधों और वक्तव्यों में प्रयुक्त भाषा, तर्क-शैली और वैचारिक संरचना का अध्ययन किया गया है। निष्कर्षतः यह स्पष्ट होता है कि सोबती का निबंधात्मक लेखन हिन्दी साहित्य में वैचारिक स्वतंत्रता और स्त्रीवादी चेतना का सशक्त दस्तावेज है।

कीवर्ड :- कृष्णा सोबती, वैचारिक साहस, निबंध-साहित्य, स्त्रीवादी दृष्टि, लेखक की स्वतंत्रता, भाषा-चेतना, सामाजिक प्रतिरोध

प्रस्तावना :-

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हिन्दी साहित्य जिस सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन के दौर से गुज़र रहा था, उसी समय कृष्णा सोबती का लेखन उभरता है। यद्यपि वे अपनी कथा-कृतियों के लिए व्यापक रूप से चर्चित हैं, परंतु उनका निबंधात्मक लेखन भी उतना ही तेजस्वी और मर्मभेदी है। उनके निबंधों में एक ऐसी लेखिका दिखाई देती है जो साहित्य को केवल सृजन की प्रक्रिया नहीं, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व का क्षेत्र मानती है।

सोबती के लिए लेखन 'सुविधा' नहीं, बल्कि 'प्रतिबद्धता' है। वे अपने समय की राजनीति, समाज और साहित्यिक संस्थाओं पर निर्भीक टिप्पणी करती हैं। उनका यह रुख उन्हें एक वैचारिक रूप से सजग और साहसी लेखिका के रूप में स्थापित करता है। वे

Anusandhanvallari
Vol 2025, No.1
January 2025
ISSN 2229-3388

किसी सत्ता-केन्द्र के प्रति अनुगामी नहीं हैं; बल्कि वे प्रश्न करती हैं—लेखक की भूमिका क्या है? भाषा की अस्मिता क्या है? स्त्री की स्वतंत्रता का अर्थ क्या है?

यह शोध इसी प्रश्न के साथ आगे बढ़ता है कि सोबती के निबंधों में 'वैचारिक साहस' किस प्रकार प्रकट होता है और उसका साहित्यिक व सामाजिक महत्व क्या है।

साहित्य समीक्षा :-

कृष्णा सोबती पर अब तक अधिकांश शोध उनके उपन्यासों और कथाओं पर केंद्रित रहा है। उनकी स्त्री-पहचान, भाषा-प्रयोग और सांस्कृतिक चेतना पर अनेक विद्वानों ने कार्य किया है। किन्तु उनके निबंधात्मक लेखन पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया गया है।

कुछ आलोचकों ने उनके वैचारिक लेखन को आत्मकथात्मक विस्तार माना है, जबकि अन्य ने उसे स्त्रीवादी हस्तक्षेप के रूप में देखा है। फिर भी, एक समग्र अध्ययन, जो उनके निबंधों में निहित वैचारिक साहस को केंद्र में रखकर विश्लेषण करे, अपेक्षाकृत कम दिखाई देता है।

यह शोध इसी रिक्ति को भरने का प्रयास है, जहाँ सोबती के निबंधों को एक स्वतंत्र वैचारिक पाठ के रूप में पढ़ा जाए।

शोध उद्देश्य :-

- कृष्णा सोबती के निबंधों में वैचारिक साहस की अभिव्यक्तियों की पहचान करना।
- स्त्रीवादी दृष्टिकोण के संदर्भ में उनके विचारों का विश्लेषण करना।
- लेखक की स्वतंत्रता और भाषा-चेतना संबंधी उनके दृष्टिकोण को स्पष्ट करना।
- उनके निबंधों के सामाजिक और साहित्यिक महत्व को स्थापित करना।

शोध पद्धति :-

यह शोध मुख्यतः पाठ-विश्लेषण पर आधारित है। चयनित निबंधों, सार्वजनिक वक्तव्यों और लेखों का सूक्ष्म अध्ययन किया गया है। विश्लेषण के दौरान निम्न दृष्टियों का उपयोग किया गया है:

- स्त्रीवादी आलोचना
- वैचारिक विमर्श
- सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य

इस पद्धति के माध्यम से भाषा, तर्क-शैली, विषय-चयन और अभिव्यक्ति के स्वर का विश्लेषण किया गया है।

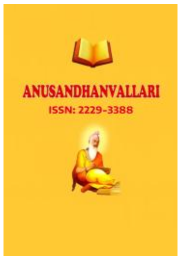

Anusandhanvallari
Vol 2025, No.1
January 2025
ISSN 2229-3388

विश्लेषण एवं विवेचना :-

कृष्णा सोबती के निबंधों में सबसे पहले जो तत्व उभरकर सामने आता है, वह है—निर्भीकता। वे किसी भी विषय को छूते समय संकोच नहीं करतीं। चाहे वह स्त्री की देह का प्रश्न हो, लेखक की स्वायत्तता का मुद्दा हो या साहित्यिक राजनीति का विवाद—वे स्पष्ट और तर्कपूर्ण ढंग से अपनी बात रखती हैं।

उनका वैचारिक साहस केवल आलोचना तक सीमित नहीं, बल्कि वैकल्पिक दृष्टि प्रस्तुत करने में भी दिखाई देता है। वे परंपरा को पूरी तरह अस्वीकार नहीं करतीं, बल्कि उसमें मौजूद जड़ता को चुनौती देती हैं। इसी संतुलन में उनका बौद्धिक सामर्थ्य निहित है।

भाषा के स्तर पर भी उनका साहस स्पष्ट है। वे कृत्रिम और अलंकारिक शैली से बचते हुए सीधे संवाद की शैली अपनाती हैं। यह शैली पाठक को निकटता का अनुभव कराती है और विचारों को अधिक प्रभावी बनाती है।

स्त्रीवादी दृष्टि से देखा जाए तो सोबती स्त्री को करुणा की पात्र नहीं, बल्कि विचारशील सत्ता के रूप में प्रस्तुत करती हैं। वे स्त्री की स्वतंत्रता को केवल आर्थिक या सामाजिक प्रश्न तक सीमित नहीं करतीं, बल्कि उसे मानसिक और बौद्धिक स्वतंत्रता से जोड़ती हैं।

उनके निबंधों में सत्ता-विरोधी स्वर भी स्पष्ट है। वे साहित्यिक संस्थानों की राजनीति पर प्रश्न उठाती हैं और लेखक की स्वतंत्रता की वकालत करती हैं। उनके लिए साहित्य का अर्थ है—सच कहना, चाहे वह असुविधाजनक क्यों न हो।

निष्कर्ष :-

उपरोक्त विवेचना से स्पष्ट होता है कि कृष्णा सोबती के निबंध केवल विचार-प्रस्तुति नहीं, बल्कि वैचारिक प्रतिरोध के दस्तावेज हैं। उनका साहस किसी क्षणिक आक्रोश का परिणाम नहीं, बल्कि गहरी मानवीय और स्त्रीवादी प्रतिबद्धता का परिचायक है।

वे साहित्य को सामाजिक चेतना का माध्यम मानती हैं और लेखक को एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में देखती हैं। उनके निबंध हिन्दी साहित्य में बौद्धिक स्वतंत्रता, भाषा की अस्मिता और स्त्रीवादी चेतना के सशक्त प्रमाण हैं।

इस प्रकार, कृष्णा सोबती का निबंधात्मक लेखन हिन्दी साहित्य में वैचारिक साहस का एक महत्वपूर्ण अध्याय है, जो आज भी प्रासंगिक और प्रेरक बना हुआ है।

संदर्भ सूची :-

[1] कृष्णा सोबती, हम हशमत. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।

[2] कृष्णा सोबती, सोबती-वैचारिकी (चयनित निबंध). नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।

[3] हिन्दी साहित्य के समकालीन आलोचना ग्रंथ।

[4] स्त्रीवादी आलोचना संबंधी संदर्भ पुस्तकें।